ISSN: 2347-7660 (Print) /ISSN: 2454-1818 (Online)

Double Blind Peer-reviewed Refereed Research Journal

INTERNATIONAL JOURNAL OF SCIENTIFIC & INNOVATIVE RESEARCH STUDIES

Volume-XI, Issue-I. January 2023

SPECIAL ISSUE / विशेषांक

PRE & POST-INDEPENDENCE INDIA AND CONCEPT OF DEVELOPMENT

Chief Editor

Prof. Maruti A. Dombar **Dr. Vidyavati Rajput**

Editors

Dr. Arundhati F. Badami **Dr. N. R. Savatikar**

Shri Ramreddy K. **Shri V.S. Meeshi**

Dr. N.A. Koujageri

2023

Scanned with OKEN Scanner

A Quarterly Multidisciplinary Double-Blind Peer-Reviewed International Refereed Research Journal

IJSIRS

(International Journal of Scientific & Innovative Research Studies)

ISSN: 2347-7060 (Print) | ISSN : 2454-1818 (Online)

Volume – XI, Issue – I, January (2023)

CHIEF EDITOR (SPECIAL ISSUE)

Prof. Maruti A. Dombar / Dr. Vidyavati Rajput

Editor's

Dr. Arundhati F. Badami / Shri Ramreddy K. / Dr. N.R. Savatikar
Shri V.S. Meeshi / Dr. N.A. Koujageri

Editorial Board

Dr. Hasankhan K. Kulkarni / Dr. Shrinivas V. Shenivi / Dr Shyam Gayakwad
Smt. Afreen Hallur / Shri S.M. Holi / Smt. G.A. Akki / Smt. Shilpa Naikar
Smt. Shweta / Shri B.S.Beerannavar / Shri M.C.Hadimani
Shri Mohan Benachmaradi / Smt.Sunanda Hatti

1. Editing of the Research Journal is processed without any remittance. The selection and publication is done after recommendation of subject expert referee.
2. Thoughts, language, vision and example in published research paper are entirely of author of research paper. It is not necessary that both editor and editorial board are satisfied by the research paper. The responsibility of the matter of research paper is entirely of author.
3. In any condition if any National / International University denies to accept the research paper published in the Journal then it is not the responsibilities of Editor, publisher and Management.
4. Before re-use of published research paper in any manner, it is compulsory to take written acceptance from Chief Editor, unless it will assumed as disobedience of copyright rules.
5. All the legal undertaking related to this journal is subjected to be hearable at Lucknow jurisdiction only.

Scanned with OKEN Scanner

International Journal of Scientific & Innovative Research Studies

ISSN: 2347-7060 (Print) | ISSN : 2454-1818 (Online)

Volume – XI, Issue – I, January (2023)

CONTENTS

HINDI ARTICLES

No.	Topic	Author Name	Page No.
1.	प्रसाद की 'ग्राम' कहानी में छायावाद और स्त्री शोषण की झलक	डॉ. हसनखान के. कुलकर्णी	01
2.	युग प्रवर्तक साहित्यकार जयशंकर प्रसाद	श्री मारुति भीमण्णा	04
3.	आधुनिक नारी का प्रतिबिंब : ध्रुवस्वामिनी	श्रीमती लता कुलकर्णी	08
4.	जयशंकर प्रसाद की उपन्यासों में स्त्री विमर्श	राहुल लक्ष्मण कासार	11
5.	कहानीकार जयशंकर प्रसाद का कला पक्ष	डॉ. प्रवीण एम. आनंदकंदा	15
6.	प्रसाद जी के नाटकों की मौलिक विशेषताएं	डॉ. मेहनाज़ बेगम डी सरखवास,	21
7.	प्रसाद जी के साहित्य का एक अध्ययन	श्रीमती राधिका जी	24
8.	प्रसाद और कुवेंपु के साहित्य में सांस्कृतिक चेतना	डॉ. मल्लिकार्जुनय्या जी एम	27
9.	कामायानी और प्रतीकवाद	डॉ. आर. प्रकाश	30
10.	बाल मनोविज्ञान को दर्शाती ' मधुआ ' कहानी	डॉ श्रीमती नलिनी कुलकर्णी	33
11.	जयशंकर प्रसाद के नाटक : एक अवलोकन	सती भारती दयानंद	35
12.	जयशंकर प्रसाद का साहित्य (उपन्यास के संदर्भ में)	डॉ. कविता गद्दगूली	40
13.	रवीद्रनाथ टैगोर का साहित्य और उनका शैक्षणिक दृष्टि	डॉ. दीपा रागा	44
14.	जयशंकर प्रसाद की कहानियों में आदर्शवाद	कु. कविता यू.पी.	48
15.	जयशंकर प्रसाद के कामायनी महाकाव्य में आधुनिक समस्याएं	डॉ. श्याम गायकवाड	50
16.	जयशंकर प्रसाद की कहानियों में आदर्श भाव	डॉ भारती एच दोडमनी	55
17.	छायावादी काव्य के संस्थापक प्रसाद	डॉ. जफ़रुल्लाखान के के	59
18.	जयशंकर प्रसाद के साहित्य में नारी	डॉ. नाज़िरुन्निसा एस	61
19.	ग्रामीण विकास में परंपरागत संचार माध्यम	श्री लाड़लेमशाक पी. नदाफ़	65
20.	हिन्दी साहित्य मे जयशंकर प्रसाद का स्थान...	उषा देवी जी.	71
21.	ध्रुवस्वामिनी नाटक में अंकित समस्याएं	कु. आशा बि	75
22 .	जयशंकर प्रसाद जी की कथा साहित्य में नारी विमर्श	डा. प्रशांतिनी. पी. मरली	79

Scanned with OKEN Scanner

Volume : XI | Issue : I | January 2023 ISSN: 2347-7660 (Print) | ISSN : 2454-1818 (Online)

जयशंकर प्रसाद के कामायनी महाकाव्य में आधुनिक समस्याएं

डॉ. श्याम गायकवाड
हिंदी अध्यापक
बी आर बी कॉलेज ऑफ कॉमर्स, रायचूर

साहित्य अपने युग की प्रतिध्वनि होता है। साहित्यकार अपने युग से विमुख रहकर साहित्य सर्जन नहीं कर सकता। युग की पुकार, युग के स्वर और की समस्याएं उसके कृति को किसी न किसी रूप में प्रभावित करती है। महाकाव्य के रचनाकार की अमर लेखनी तो युगीन इन विशेषताओं को आत्मसात किए बिना अग्रसर हो ही नहीं सकती। क्योंकि महाकवि त्रिकालदर्शी होता है। अतीत, भविष्य और वर्तमान तीनों उसकी कृति में साकार हो उठती है। भले ही अपने महाकाव्य में वहां अतीत का चित्रण करें अथवा भविष्य का, वर्तमान की अवहेलना करके आगे नहीं बढ़ सकता है। वाल्मीकि,कालिदास, तुलसीदास, शेक्सपियर आदि महाकवियों की कृतियां इस सत्य की प्रमाण है। ये सभी महाकवि अपनी युग की उपज है। और उनकी कृतियां तत्कालीन युग जीवन से प्रभावित है। इसी परंपरा की एक कड़ी के रूप में जयशंकर प्रसाद भी है। जिनकी कामायनी युग की ज्वलंत समस्याओं को अपने में समाविष्ट करके हमारे समक्ष उपस्थित हुई है। कामायनी में कवि ने जिन घटनाओं को अपनी कल्पना की तुलिका से अंकित किया है। वे भी युग की समस्याओं के रंग में रंगी हुई है। डॉ. रामलाल सिंह ने इस संबंध में सत्य ही लिखा है – "कामायनी की आधिकारिक काल्पनिक घटनाएं आधुनिक समस्याओं की ओर संकेत कर रही है। "

जयशंकर प्रसाद को किसी भिन्न युगीन इन परिस्थितियों में जीवनयापन करना पड़ता तो कामयानी अपने प्रस्तुत स्वरूप से नितांत परिवर्तित होती । आज हमें कामायनी में बुद्धिवाद का विरोध, भौतिकवाद का खंडन, निरंकुशता के विरोध क्रांति का उद्घोष एवं मूर्ति मती नारीत्व श्रद्धा की स्थापना आदि के जो स्वर् सुनाई पडते हैं, वे योग के प्रभावो के ही सूचक है। वैज्ञानिक अविष्कारों की निरंतर बढ़ती हुई उन्नति न आज मानव - मानव में जो दूरी स्थापित कर दी है। और मनुष्य को अत्यंत स्वार्थी,निर्भय,यांत्रिक बना दिया है। उसे देख प्रसाद जी का हृदय कराह उठा। मानव की इस दुःखद परिस्थिति को देख उनके अंतर में कसक और नयनो में अश्रु–मुक्ताओं की सृष्टि हुई और उनकी लेखनी से निसृत हो उठी आनंदवाद के पथ का प्रदर्शन करनेवाली कामायनी भौतिकता और बुद्धिवाद के दूषित प्रभाव ने मानवता को जिस प्रकार व्याधिग्रस्त कर रखा है, उसे दलित - पीड़ित मानवता को बचाने के लिए कामायनी की रचना हुई है। नारी का गरिमामय उदात्त स्वरूप यदि आज नारीत्व के गुणों से रहित, मलिन और अवदमीत ना हो गया होता तो नारीत्व के दिव्य गुणों की विभूतियों से आपूर्ण श्रद्धा का चरित्रअंकित करने की प्रेरणा कामायनकार को मिलती शासकवर्ग की निरंकुशता यदि चरम सीमा पर न पहुंची होती और उनकी अधिकतम भोग की लालसा यदि प्रबलतम न हो गई होती तो क्रांति और विप्लव द्वारा निरंकुशता और आबाध अधिकार का विरोध भी कवि ने न किया होता। वस्तुतः कामायनी में जिन काल्पनिक घटनाओं की सृष्टि हुई है, वे वास्तविकता के धरातल पर ही प्रतिष्ठित है। उनकी सृजन - प्रेरणा आधुनिक युग की समस्याओं ने ही कवि को प्रदान की है। आधुनिक बुद्धिवादी युग के प्रभाव ने ही कामायनी को उसके वर्तमान रूप में हमारे समक्ष रखा है। प्रसादजी को यह कृति जहां एक ओर आदि मानव मनु और आधानारी श्रद्धा के कहानी है, वहां दूसरी ओर वह वर्तमान युग का प्रतिनिधित्व करनेवाली रचना है। गोविंद राम शर्मा ने सत्य ही लिखा है – " प्रसादजी की कामायनी आधुनिक युग की प्रतिनिधि रचना है। उसमें आज के युग की अनेक समस्याओं का समावेश दिखाई देता

Scanned with OKEN Scanner

है। शासक और शासित की समस्या, पूंजीपति और श्रमिकों की समस्या एवं जाति वर्गगत भेद की समस्या जैसे वर्तमान युग की समस्याओं का चित्रण कामायनी में प्रमुख रूप से हुआ है। "

कामायनी महाकाव्य में आने वाले कुछ समस्याएं इस प्रकार हम स्पष्ट कर सकते हैं।

ऊंच-नीच की समस्या :- कामायनी में काम की निम्न उक्ति आधुनिक युग के भारत की जाति- पाती का विरोध समस्या पर प्रकाश डाल रही है —

यह अभिनव मानव प्रजा सृष्टि।
द्वयता में लगी निरंतर ही वर्णों की करती रही वृष्टि।
अनजान समस्याएं गढ़ती रचती हो अपनी ही विनिष्टि।
कोलाहल कलह अनंत चले,एकता नष्ट हो,बढ़े भेद।
अभिलाषित वस्तु तो दूर रहे, मिली अनिश्चित दुखद खेद
हृदय का हो आवरण सदा अपने वक्षस्थल की जड़ता।
पहचान सकेंगे नहीं परस्पर चले विश्व गिरता पड़ता।
सब कुछ भी हो यदि पास भरा पर दूर रहोगे सदा तुष्टि।
दुख देगी,यह संकुचित दृष्टि।"

इस पंक्ति द्वारा कवि ने बताया है कि जो जाति व्यवस्था समाज को छुआछूत और ऊंच-नीच के दोषों से मुक्त होकर सभी लोग मिलजुल कर रहने से सबका भला होगा ऐसा कवि का कहना था। और और संकुचित दृष्टि से बाहर आकर सभी लोग प्यार से रहे।

अमीर - गरीब की समस्या :- आज का युग बुद्धिवादी भौतिक युग है। प्रसाद जी ने कामायनी में इस युग का चित्रण सारस्वत प्रदेश के दृश्य द्वारा किया है आज मानव विज्ञान के उपकरणों द्वारा स्वयं को नित्य प्रति समृद्ध बनता जा रहा है।वह जल, प्रकाश, अग्नि आदि प्राकृतिक उत्पादन से अब ईश्वर पर अवलंबित न रहकर स्वावलंबी बन गया है। किंतु यह सारी सुख सुविधा धनीकों के लिए हैं। श्रमिक वर्ग के लिए सुख सुविधा सुलभ तरीके से नहीं मिल पाते। इस भौतिकवाद सभ्यता के विकास का परिणाम यह हुआ कि मनुष्य- मनुष्य के हृदय में एक दूसरे के प्रति दूरी बहुत बढ़ रही है —

"अपनी-अपनी पड़ी सभी को,
छिन्न स्नेहा का कोमल तंतु ।"

इस प्रकार सारस्वत प्रदेश के दृश्य द्वारा कवि ने वर्तमान भारत का चित्र उपस्थित करते हुए आमिर गरीबों का भेद भाव स्पष्ट किया।

स्त्री की समस्या :- देश की वर्तमान स्थिति किसी भी देश- प्रेमी युवक के हृदय में पीड़ा उत्पन्न कर सकती है और भारत के गौरवपूर्ण अतीत को याद कर वह कामायनी के मनु की भांति कह सकता है —

"कीर्ति दीप्ति शोभा थी नाचती,
अरुण किरण सी चारों ओर।"

आज मानव अपनी सुख सुविधा की इच्छा और आकांक्षा की अभिव्यक्ति कर रहे कामायनी के मनु। मनु का बर्बर शासन अंग्रेजों के शासन का प्रतीक है। श्रद्धा और इडा के द्वारा कवि ने स्त्रियों की समस्या पर प्रकाश डाला है। पुरुष के अत्याचारों से त्रस्त नारी को पुनः उसके गौरव पथ पर आसीन कराना ही कवि का हेतु रहा है।

सुख भोग की समस्या :-आधुनिक युग की समस्याओं का चित्रण कामयानी में दिखाई देता है। आज के युग की सबसे बड़ी समस्या बुद्धिवाद और भौतिकवाद को लेकर है। आज का मानव भौतिक सुख के लिए दर-दर भटक रहा है और उसी के द्वारा सुख की प्राप्ति करना चाहता है। किंतु क्या भौतिकवाद आज का संबल ग्रहण करके आज के मानव को वांछित आनंद की उपलब्धि हो रही है। क्या भौतिकता मानव का रक्षक रक्षक रक्त बनाने के

Scanned with OKEN Scanner

स्थान पर भक्षक नहीं बन रहे हैं क्या सुख की खोज में भटकते हुए मानव को अंततः दुख की प्राप्ति नहीं हो रही है आदि युग की ज्वलंत समस्याओं को प्रसाद जी की सूक्ष्म दृष्टि नहीं देखा और अनुभव किया प्रथा कामायनी में उनका समाधान करने का प्रयास किया। कवि का निष्कर्ष यही है कि भौतिकता मानव को सुख और आनंद प्रदान करने में समर्थ नहीं हो सकती। भौतिकता के दुष्परिणाम शीघ्र ही सामने आ जाते हैं और वे रक्तपात, अत्याचार, अन्याय और स्वार्थपरता के रूप में प्रकट होते हैं। कामायनी के नायक मनु ऐतिहासिक पात्र होते हुए भी आधुनिक बुद्धिवादी और भौतिकवादी मानव का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। यह सुख की लालसा में भटकते है और उन्हें अतृप्ति ही मिलती है। श्रद्धा द्वारा निर्मित सुखपूरित घर संसार को छोड़ वे नि:सीम और निर्वाद अधिकारों व सुखो की लालसा में सारस्वत नगर पहुंचते हैं। अपने बुद्धिबल द्वारा वहां वे भौतिक सभ्यता का प्रसार करते हैं किंतु उनकी निरंकुशता, एवं उत्तरदायित्व हीनता नगर में विप्लव की सृष्टि कर देती है कर देती है। मनु बुद्धि एवं भौतिकता का दामन छोड़ पुन: श्रद्धा का अवलंब ग्रहण करते हैं। और वह उन्हें आनंद का मार्ग दिखाती हैं ।इस प्रकार कवि ने यह स्पष्ट किया है कि यांत्रिक सभ्यता क्षणभंगुर है। उसे सप्राण बनाने के लिए वांछनीय है कि आध्यात्मिकता का संबल न छोडा जाए। अध्यात्मवाद ही प्रेम, क्षमा, समानता और उदारता व्यापक भावनाओं को स्थायि बनाता है। भौतिकता बिना अध्यात्मक के खोखली है, निर्जीव है। दोनों का सम्मिलन ही मानवता का कल्याण कर सकता है। अध्यात्म के अभाव में शासक वर्ग में निरंकुश हो उठता है और परिणामस्वरूप विप्रो की आग में भड़क उठती है। अतएव समाज में शांति और सुव्यवस्था बनाए रखने के लिए तथा मानवता के कल्याण के लिए भौतिकता और आध्यात्मवाद का संयोग दिखाई देता है।

जयशंकर प्रसाद कामायनी लिख रहे थे उस समय भारत अंग्रेजों के अधीन था। ब्रिटिश शासक वर्ग स्वार्थ साधना के लिए हर प्रकार के उचित अनुचित उपायों को अपनाकर जनता के हित का उसे कोई ध्यान न था। उदासीन जनता इन अत्याचारों को शुद्ध भाव से सहन कर रहे थी और विद्रोह और क्रांति की चिंगारियां उत्पन्न हो रही थी। शासक और शासित की यह समस्या कवि की दृष्टि से अछूत न रही और अपने महाकाव्य में उसने इसे व्यापक रूप में उपस्थित किया। मनु सारस्वत वासियों पर एहसान जताते है कि उन्होंने ही उनको सभ्य बनाया है। मनु की यह उक्ति अंग्रेज शासकों की उक्ति से भिन्न नहीं है —

"आज न पशु है हम या गूंगे काननचारी।
यह उपकृति क्या भूल गए तुम आज हमारी।।"

आम जनता के ऊपर मनु महाराज का शोषण तथा अधिकार भारत के अंग्रेज शासकों की लालसा से भिन्न नहीं है सच तो यह है कि ब्रिटिश शासकों की अत्याचारी शासन नीति में ही जयशंकर प्रसाद जी को इस प्रकार के दृश्य अंकन की प्रेरणा दी अधिकार लिप्सा से ग्रस्त मनु का कथन है —

" मैं शासक मैं चीर स्वतंत्र तुम पर भी मेरा,
हो अधिकार असीम सफल हो जीवन मेरा।"

राजा की अनदेखी प्रजा के दिल में संघर्ष और कांति की भावना उत्पन्न करती है। कवि के युग में शासकों की वाणी मनु की इस वाणी से भी नहीं थी —

"जो मेरी है सृष्टि उसी से भीत रहूं मैं।
क्या अधिकार नहीं कि कभी अविनीत रहू मैं।।"

वर्तमान में नागरिक सभ्यता अत्यंत आडंबरपूर्ण और विकृत हो उठी है। लोग नगरों को छोड़कर गांव की ओर जा रहे हैं। यही संकेत कामायनी में भी हमें मिलता है। जब मनु सारस्वत नगर को छोड़कर कैलाश आश्रम पर पहुंचते हैं और वाहां जाकर पुलक और पवित्रता का अनुभव करते हैं।

वर्तमान में नारी जागरण की भावना सर्वत्र प्रसारित हो रही है। कामायनी में भी नवयुग की इस भावना की सुंदर अभिव्यक्ति हुई है। ' श्रद्धा ' के रूप में भारतीय नारी का आदर्श रूप कवि ने हमारे सामने उपस्थित किया है। दया,

Scanned with OKEN Scanner

क्षमा, ममता, और अगाध विश्वास की प्रतिमूर्ति है प्रसादजी की नारी। वे उसे केवल वासना- पूर्ति का साधन ही नहीं मानते अपितु इस निकृष्ट विचारों का विरोध करते हुए नारी को गौरव से सम्मानित करते हैं। नारी के रूप- चित्रण में उन्होंने एकांगिता को प्रधान नहीं माना। नारी के रूप का चित्रण अत्यंत भव्य रूप में किया है —

"नित्य यौवन छवि से ही दीप्ति,
विश्व की करुण कामना मूर्ति।
स्पर्श के आकर्षण से पूर्ण,
प्रकट करती ज्यों जड़ में स्फूर्ति।।"

जयशंकर प्रसाद नारी का तिरस्कार करने वालों की आलोचना करते हैं —

"मनु तुम श्रद्धा को गए भूल उस पूर्ण आत्मविश्वासमय को उड़ा दिया था समझ तूल।"

आधुनिक नारी की स्वतंत्रता को लेकर आज के युग में दो विचारधाराएं चल रही है। पाश्चात्य नारी के सम्मान उसका पूर्ण स्वतंत्र स्वरूप तथा भारतीय आदर्शों की गरिमा से मंडित भव्य उदात्त रूप। प्रसादजी ने नारी के इन दोनों रूपों को इड़ा और श्रद्धा के माध्यम से प्रदर्शित किया है। श्रद्धा के चरित्र द्वारा नारी के आदर्शों की अभिव्यक्ति का चित्रण का स्वरूप कवि ने प्रस्तुत किया है।

कामायनी में आधुनिक युग की एक प्रधान समस्या पूंजीपति और श्रमिक वर्ग के संघर्ष को लेकर है। पूंजीपतियों का जीवन विलास से अपूर्ण है। जबकि उनके लिए प्राणपण से परिश्रम करने वाले श्रमिक को पेट भर का भोजन भी नहीं मिलता। यह समस्या कामायनी में कवि ने कई स्थानों पर चित्रित किया है। आधुनिक युग की जाति वर्ग गत समस्या का चित्रण भी कवि की खुशाल लेखनी द्वारा हुआ है।

प्रसाद जी ने कामायनी का जिस समय सृजन हुआ, उस समय गांधीजी का व्यक्तित्व, नित्य विचारधाराएं सारे देश में छाई हुई थी। वह युग गांधीवादी युग था; पूर्णरूप से गांधीजी के विचारों के प्रसार का युग था। उस युग में प्रसादजी भी गांधीवादी विचारधारा से अछूता न रहा और उसकी रचना में यत्र-/तत्र इन विचारों की सुंदर अभिव्यक्ति हुई है गांधीवाद में अहिंसा का स्थान महत्वपूर्ण है। कामायनी की नायिका श्रद्धा और अहिंसा के सिद्धांत की समर्थक है। आत्मरक्षा के लिए तो हिंसा का समर्थन किया जा सकता है। किंतु निरीह जिवो का का वध करने वाली हिंसा का विरोध है —

" अपनी रक्षा करने में जो
चल जाए तुम्हारा कहीं अस्त्र
वह तो कुछ समझ सकती हूं मैं
हिंसक से रक्षा करें शस्त्र।
पर जो निरीह है जी कर भी कुछ
उपकारी होने में समर्थ,
वे क्यों न जिए, उपयोगी बन
इसका मैं समझ सकीना अर्थ।"

राष्ट्रपिता गांधी जी ने कुटीर उद्योग - धंधों को अपनाने पर जोर दिया था। विदेशी वस्तुओं को अपनाने का उन्होंने प्रसार किया था। तकली कातती हुई श्रद्धा के निम्न चित्रों में गांधीजी की तकली और चरके का स्वर सुनाई पड़ता है -

"मैं बेटी जाती हूं तकली से
प्रतिवर्तन में स्वर विभोर,
चल री तकली धीरे-धीरे

Scanned with OKEN Scanner

प्रिय गए खेलने को अहेर।"

प्रसादजी पर गांधीवादी विचारधारा का प्रभाव पड़ा है। और ऐसा स्वाभाविक भी था क्योंकि उस समय गांधी जी का व्यक्तित्व संपूर्ण देश को अच्छादित किए हुआ था। भौतिकता और आध्यात्मिकता का समन्वय दोनों ने चाहा है। अहिंसा के पोषक दोनों है, धार्मिक रूढ़ियों के विरोधी दोनों है।

निष्कर्ष

कामायनी में प्रसाद जी ने युग और युग की विषम समस्याओं का सफल चित्रण किया है। डॉ रामलाल सिंह ने लिखा है,--- " प्रसादजी ने व्यक्ति, देश तथा जाति के साथ-साथ प्रजाति विश्व की प्रमुख समस्याओं के और भी दृष्टिपात किया और उनका स्वरूप तथा समाधान दोनों कामायनी में चित्रित किया।"इस तरह जयशंकर प्रसाद जी ने कामायनी में आधुनिक भारत में आने वाले सभी समस्याओं का चित्रण किया है और उसका समाधान करने की कोशिश किया है।

सहायक ग्रंथ सूची

१. कामायनी अनुशीलन –डॉ रामलाल सिंह।
२. हिंदी के आधुनिक महाकाव्य –डॉ.गोविंदराम शर्मा।
३. कामायनी --- जयशंकर प्रसाद।
४. हिंदी महाकाव्य का स्वरूप विकास।

Scanned with OKEN Scanner